राधा कृष्ण दत्त

संपर्क : [redacted]

डा० साहब हास्य प्रकृति के हैं... और सामने वाले व्यक्ति में हास्य को खूब ढूंढकर उसका मनोरंजन करते हुए उसके दुःख, उसकी पीड़ा दूर करते हैं और साथ ही साथ उसकी चिकित्सा करते हैं..... स्वभाव से कलाकार हैं... और व्यवहार से व्यवसायी भी हैं.... चिकित्सक तो हैं ही... कुशल, सरल और अपने कार्य के प्रति उत्तरदाई और समर्पित हैं। मेरे चिकित्सक के तौर पर हमारे संबंध के 6½ वर्ष हो चुके हैं और अब हमारे मित्र के समान भी हैं... पिछले 20 सालों से मैं कफ की बिमारी से पीड़ित था... अर्थात सर्दी-खांसी और उसके दुष्प्रभाव... सुनने में बिमारी आसान सी लगती है... परन्तु भुक्तभोगी ही समझ सकता है... एक लंबे समय तक उनकी चिकित्सा के तहत रहा... जो हुआ वो कहीं नहीं हुआ... अर्थात किसी चिकित्सक या चिकित्सा विधि में नहीं हुआ... अब मैं स्वस्थ रहने लगा हूँ... अब कभी-कभार उनके औषधी की आवश्यकता होती है... इनका समर्पण तथा उत्तरदाई प्रकृति अमूल्य है जो मुझे खूब भाता है... वर्तमान परिस्थिति में पारिश्रमिक सामान्य है जो बिलकुल भी नहीं चुभती... नियम कानून के पक्के हैं माने तो लाभदायक है, पर आपकी स्वतंत्रता पर कभी कभी बाधा बनती है, कुलमिलाकर बहुत अच्छा अनुभव रहा है इतने लंबे अरसे में... आप योग्य चिकित्सक के साथ-साथ योग्य गायक भी हैं.... मैंने आपका गायन सुना है... मैं औरों से भी आग्रह करता हूँ कि आप...

निमित्त राधा कृष्ण दत्त